शिक्षा-दशा खराब दिशा में संभ्रम

निहारते देश, युवा बच्चे । भविष्य पर सवाल

11 नवंबर देश के पहले शिक्षा मंत्री व प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ0 अबुल कलाम आजाद का जन्मदिन है जिसे शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

देश के पहले शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद ने निष्पक्षता एवं समर्पण के साथ शिक्षा का ढांचा तैयार कराया एवं उसे तत्कालीन परिस्थितियों में सही रास्ते पर चलाने की पूरी कोशिश की । मगर यदि देश में कोई क्षेत्र सबसे ज्यादा उपेक्षित रहा एवं सबसे अधिक कैजुअल तरीके से चलाया गया तो वह शिक्षा का क्षेत्र ही रहा और इसके एक नहीं अनेक कारण रहे ।

दरअसल शिक्षा ऐसा क्षेत्र है जिससे सरकार को आय नहीं होती, जिसे उत्पादक नहीं माना जाता बल्कि उस में खर्चा ही अधिक होता है और तत्कालीन परिस्थितियों में देश को प्रचुर मात्रा में संसाधनों की आवश्यकता थी जो शिक्षा की क्षेत्र में उपलब्ध नहीं हो पाए। राजनीति ने भी इसमें भूमिका अदा की और शिक्षा की नीतियां लगातार बदलती रहीं।

हर सरकार अपने चिंतन व विचारधारा के अनुसार अथवा राजनीतिक लक्ष्य साधने के लिए साधने के लिए शिक्षा नीतियां बदलती गई । परिणाम भी सामने है कि शिक्षा कभी उत्तर, तो कभी दक्षिण कभी पूर्व, तो कभी पश्चिम भटकती गई । हमने अपनी परंपरागत गुरुकुल पद्धति की शिक्षा को नहीं अपनाया और पश्चिमी शिक्षा की मूल भावना को हम न समझ पाए और न ही उसे लागू करने की मानसिकता एवं संसाधन तैयार कर पाए।

हालांकि समय-समय पर शिक्षा के स्तर को सुधारने एवं उसे व्यवहारिक बनाने के लिए अनेक आयोग एवं समितियां बनी मगर हैरतअंगेज बात यह रही कि इन आयोगों एवं समितियों ने अपने सर्वेक्षणों में ही इतना समय लगा दिया कि जब तक उन्होंने शिक्षा नीति तैयार की तब तक शिक्षा का परिवेश एवं वातावरण ही बदल गया और इन आयोगों का मंथन व्यर्थ हो गया । उनके मंथन से अमृत निकालने की आशा की गई थी लेकिन निकले केवल झाग। यह क्रम राधाकृष्णन आयोग से लेकर कोठारी कमीशन, यशपाल कमेटी तथा उसके बाद बनाए जाने वाली लगभग सभी समितियों या आयोगों पर लागू होता है । कभी बुनियादी शिक्षा तो कभी सीसीई और अब एन ए ई पी 2020 नई शिक्षा नीति के रूप में लागू की गई है

समय के साथ बदलाव ज़रुरी हैं पर, बिना सोचे समझे नहीं , बिना दीर्घकालिक प्रभाव जाने बदलाव नहीं किया जाना चाहिए । हमें हर हाल में एक व्यवहारिक कार्यप्रधान ,श्रम प्रधान, तकनीकी प्रधान ,जीवनोपयोगी , रट्टू तोते न पैदा करने वाली, श्रम से हिकारत न करने वाली समावेशी शिक्षा व शिक्षानीति चाहिए । हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो हमारे बच्चों को शारीरिक व मानसिक दृढ़ता देने के साथ उनके कोमल भावों को भी बचा कर रखे न कि केवल ज़्यादा से ज़्यादा कमाने वाली मशीनों मे बदलने वाली संवेदनहीन शिक्षा ।

दुर्भाग्य है कि हम पश्चिमी देशों के अंधानुकरण में ऐसा पड़े कि हमने शिक्षा के क्षेत्र का बंटाधार करने में कोई कमी नहीं छोड़ी कई बार तो यहां तक हुआ कि जिस शिक्षा नीति को वें छोड़ने के कगार पर होते हम उसे लपक कर गले लगा रहे होते यानी एक प्रकार से कह सकते हैं कि पश्चिम की उतरन को भारत की पहरावन बनाने की विवेकहीन दौड चलती रही और यह घातक सिद्ध हुई।

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो सबसे बड़ी भूल हुई वह शायद यह थी कि हमने यहां की शिक्षा प्रणाली को यहां की परिस्थितियों एवं परिवेश के अनुसार विकसित नहीं किया कभी अत्याधुनिक के चक्कर में संस्कारों एवं मूल्यों को बिसराते रहे तो कभी मूल्यों एवं संस्कारों से चिपक कर आधुनिकता को त्यागते रहे । दोनों ही स्थितियां खराब सिद्ध हुई ।

शिक्षा के क्षेत्र में मूल लक्ष्य है व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास और जब इस सर्वांगीण विकास नाम के शब्द पर आते हैं तो यह बहुत व्यापक हो जाता है । इसमें कदम दर कदम बढ़ना होता है । यदि हम प्राथमिक स्तर से ही सर्वांगीण विकास की बात करेंगे तो नन्ही कली जैसा बच्चा पिस कर रह जाएगा ।

वस्तुतः इसे हम ग्रेडिड ऑल राउंड डेवलपमेंट के रूप में लेना चाहिए । प्राथमिक स्तर पर भाषा एवं प्राथमिक गणित के साथ-साथ खेल खेल में कार्य साधक ज्ञान एवं थोड़ा बहुत हस्तकला का विकास करते हुए शारीरिक विकास पर ध्यान देना चाहिए । उच्च प्राथमिक या जूनियर स्तर पर हस्त कार्य को बढ़ावा देते हुए हस्त कौशल के प्राथमिक स्वरूप से बच्चे को परिचित कराते हुए उसे गणितीय ज्ञान के साथ-साथ समाज विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान देने की शुरुआत करनी चाहिए ।

पुनश्च यदि अति की जाएगी तो बच्चे में अरुचि पैदा होगी । हमें मूल्यांकन के स्तर पर भी सामूहिक के बजाय बहुत कुछ व्यक्तित्व आधारित होना पड़ेगा । सेकेंडरी स्तर पर बच्चा किशोरावस्था में होता है और उसका शरीर विकसित हो रहा होता है उसमें परिवर्तन हो रहे होते हैं इन को ध्यान में रखते हुए उसे शारीरिक विज्ञान का परिचय दिया जाना बहुत जरूरी है । इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि हम इसी स्तर पर उसे सेक्स एजुकेशन देने पर उतर आएं क्योंकि वह मानसिक रूप से अभी बहुत अपरिपक्व है ।

ग्रेजुएशन के स्तर पर शिक्षार्थी काफी परिपक्व हो चुका होता है अब उसे विशिष्ट शिक्षा एवं दिशा की जरूरत होती है । यहां से ज्ञान की गहराई होनी चाहिए और इस प्रकार के विषय विकसित किए जाने चाहिए कि स्नातक स्तर पर आते-आते वह अधिक नहीं तो कम से कम अपनी फीस के लायक तो अवश्य ही कमाने लगे । इसके लिए महाविद्यालयों को बाध्य भी किया जा सकता है कि वे फीस का भुगतान माता-पिता से न लेकर बच्चे के उत्पादक कार्यों से ही उसकी पूर्ति करें ।स्नातकोत्तर स्तर पर या उससे आगे की शिक्षा केवल उन्हीं शिक्षार्थियों को दी जाए जो उसके इच्छुक एवं काबिल हैं ।

शिक्षा ऐसा गहन विषय है जिस पर जितना कहा जाए वह कम है । उसे अनुत्पादक मानना उचित नहीं है क्योंकि यह एक प्रकार का निवेश है जिससे भविष्य के राष्ट्र निर्माता तैयार होते हैं अतः इस में इमानदारी पारदर्शिता एवं समग्रता का होना बहुत जरूरी है।

डॉ घनश्याम बादल

(लेखक जाने माने शिक्षण संस्थान सेवानिवृत् शिक्षक हैं)

महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर 72 छठ-बेले की तपस्या कर नगर में रचा स्वर्णिम इतिहास

कांठेड़ परिवार के नन्हे बच्चों ने लिया पारणे का लाभ

महिदपुर रोड में साध्वी डॉ.अमृतरसा श्रीजी महाराज साहब की पावन निश्रा में 72 समाजजनों ने की कठिन तपस्या, नन्हे बाल तपस्वियों ने भी बढ़ाया गौरव





महिदपुर रोड में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक एवं गौतम स्वामी के केवलज्ञान प्राप्ति के पावन एवं मंगलकारी अवसर पर राजेंद्र सूरी ज्ञान मंदिर में चातुर्मास हेतु विराजित परम पूज्य साध्वी डॉ.अमृतरसा श्रीजी महाराज साहब आदि ठाणा की पावन निश्रा में नगर में धर्म एवं तपस्या की अनुपम मिसाल देखने को मिली।

इस पावन अवसर पर नगर के लगभग 72 समाजजनों ने छठ-बेले अर्थात लगातार 2 उपवास की कठिन तपस्या कर धर्म आराधना की।विशेष बात यह रही कि छोटे से नगर महिदपुर रोड में लगभग 190 जैन समाजजनों की संख्या होने के बावजूद 72 लोगों द्वारा तपस्या करना अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।इस तप आराधना के माध्यम से समाजजनों ने नगर में तपस्या का नया कीर्तिमान स्थापित कर स्वर्णिम इतिहास रचा।

धर्मसभा में पूज्य साध्वी डॉ.अमृतरसा श्रीजी महाराज साहब ने भगवान महावीर स्वामी एवं गौतम स्वामी के जीवन चरित्र,उनके त्याग,तप,संयम एवं धर्म संदेशों की विस्तारपूर्वक विवेचना करते हुए उपस्थित समाजजनों को जिनवाणी का रसपान कराया।उन्होंने धर्म आराधना एवं तपस्या के महत्व को समझाते हुए जीवन में संयम और आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

इस तप आराधना की विशेष उपलब्धि यह रही कि नन्हे-नन्हे बाल तपस्वियों ने भी बेले की कठिन तपस्या कर नगर एवं समाज को गौरवान्वित किया।बच्चों से लेकर बड़ों तक में धर्म के प्रति उत्साह,श्रद्धा एवं समर्पण का अद्भुत वातावरण देखने को मिला।जैन समाज मीडिया प्रभारी सचिन भंडारी ने बताया कि समस्त तपस्वियों के पारणा कराने का मंगलकारी लाभ काठेड़ परिवार को प्राप्त हुआ।परिवार के संस्कारी बच्चों हृदय एवं श्रेयम ने अपनी गुल्लक में संचित की गई राशि से अपनी परदादी श्रीमती लीलाबाई,दादाजी दिनेशकुमार एवं पिता राहुलकुमार काठेड़ की आज्ञा एवं प्रेरणा से इस पुनीत एवं मंगलकारी लाभ को लिया। बच्चों द्वारा अपनी गुल्लक के पैसों को धर्मकार्य में समर्पित करना परिवार के उच्च संस्कारों एवं धार्मिक भावना का प्रेरणादायी उदाहरण बना। सकल जैन श्रीसंघ महिदपुर रोड द्वारा लाभार्थी काठेड़ परिवार की खूब-खूब बारंबार अनुमोदना की गई तथा बच्चों की इस सुंदर धर्मभावना एवं संस्कारों की मुक्तकंठ से सराहना की गई।

इस प्रकार भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर 72 समाज जनों द्वारा छठ-बेले की तपस्या और नन्हे बालकों की धर्म के प्रति समर्पण भावना ने महिदपुर रोड नगर को धर्म आराधना के क्षेत्र में एक नई पहचान प्रदान की तथा समाज में तप,त्याग, संयम और संस्कारों का अनुपम संदेश दिया।

एक्सिस बैंक ने कार और दोपहिया वाहन खरीदने वालों के लिए 30 मिनट में लोन राशि उपलब्ध कराने की सुविधा शुरू की



मुंबई, - एक्सिस बैंक ने कार और टू-व्हीलर ग्राहकों के लिए एक डिजिटल ऑटो लोन सुविधा शुरू की है। इसे वाहन फाइनेंस कराने की प्रक्रिया को आसान और तेज़ बनाने के लिए तैयार किया गया है, जिसके तहत मात्र 30 मिनट में लोन की राशि सीधे खाते में भेज दी जाती है। यह सुविधा ग्राहकों को किसी भी ब्रांड या मॉडल का वाहन चुनने की आज़ादी देती है। साथ ही, यह लोन मंजूरी, डीलर का चुनाव, ग्राहक सत्यापन और लोन वितरण को एक ही डिजिटल प्रक्रिया में जोड़ती है, जिससे ग्राहक वाहन चुनने से लेकर उसके मालिक बनने तक का सफर बिना किसी देरी के पूरा कर सकते हैं।

यह सुविधा बैंक के मौजूदा ग्राहकों के साथ-साथ नए ग्राहकों के लिए भी उपलब्ध है, जो डिजिटल ऑटो फाइनेंसिंग के क्षेत्र में इसे बेहद खास बनाती है। इसके तहत 100त्न तक फंडिंग की पेशकश की जा रही है और पात्र ग्राहक आवेदन से लेकर लोन वितरण तक की पूरी प्रक्रिया को डिजिटल तरीके से पूरा कर सकते हैं।

आवेदन प्रक्रिया को बहुत कम चरणों के साथ बेहद सरल बनाया गया है। ग्राहक अपनी पसंद का वाहन चुन सकते हैं, लोन ऑफर की समीक्षा कर उसे स्वीकार कर सकते हैं, डीलर चुन सकते हैं, केवाईसी (च्यङ्घष्ट) पूरी कर सकते हैं और एक ही प्रक्रिया के भीतर तुरंत लोन वितरण की मंजूरी दे सकते हैं।

इस सुविधा की शुरुआत के साथ ही एक्सिस बैंक ने त्योहारी सीजन के लिए एक विशेष अभियान भी शुरू किया है। यह अभियान 'जैसे ही मन बनाएंगे, लोन पाएंगे' की थीम पर आधारित है। अभियान का मुख्य संदेश है कि जब ग्राहक वाहन खरीदने का फैसला कर ले, तो पैसों का इंतजाम उसकी खरीदारी में देरी की वजह नहीं बनना चाहिए।

कार और दोपहिया वाहनों के लोन के लिए अलग-अलग विज्ञापन फिल्मों के जरिए इस अभियान में दिखाया गया है कि ग्राहक लंबी कागजी प्रक्रिया और कई जगहों पर जाने की जरूरत के बिना अपनी खरीदारी का फैसला तुरंत अमल में ला सकते हैं। प्रमुख बाजारों में डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए इस अभियान का प्रचार किया जा रहा है।

यह नई सुविधा तकनीक और प्रक्रियाओं में बदलाव के जरिए लोन लेने के अनुभव को बेहतर बनाने पर एक्सिस बैंक के लगातार ध्यान को दर्शाती है। लोन मिलने में लगने वाला समय कम करके और वित्तीय सुविधा तक पहुंच आसान बनाकर बैंक अधिक से अधिक ग्राहकों के लिए वाहन खरीदना आसान बनाना चाहता है। साथ ही, इससे खुदरा कर्ज के बाजार में अपनी स्थिति मजबूत करने में भी मदद मिलेगी।

इस सुविधा की शुरुआत पर एक्सिस बैंक के ग्रुप हैड ङ्क व्हील्स, हेमंत नागपाल ने कहा, आज ग्राहक चाहते हैं कि उन्हें उनकी जरूरत और फैसले के मुताबिक उतनी ही तेजी से लोन मिले। यह सुविधा बैंकिंग सेवाओं को आसान, तेज और ग्राहकों की जरूरतों के अनुरूप बनाने के हमारे व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा है।

इसके जरिए ग्राहकों को कार और दोपहिया वाहनों के लोन के लिए निर्बाध डिजिटल अनुभव मिलेगा। साथ ही, लोन की राशि सीधे और तुरंत डीलर के खाते में भेजी जा सकेगी। इससे डीलर भागीदारों को भुगतान जल्दी मिलेगा और लेन-देन की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनेगी। तकनीक और डिजिटल बुनियादी ढांचे में हमारा निवेश पूरी व्यवस्था में आने वाली बाधाओं को कम करने और प्रक्रियाओं को सरल बनाने में मदद कर रहा है।

इस अभियान पर टिप्पणी करते हुए एक्सिस बैंक के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर अनूप मनोहर ने कहा, इच्छा और उसे पूरा करने के फैसले के बीच की दूरी अब पहले से कहीं कम हो गई है। आज के ग्राहक हर चीज तुरंत चाहते हैं और यही अपेक्षा वे जीवन के बड़े फैसलों में भी रखते हैं।

रंग-ए-ज़िंदगी

त्रिपुरा की हरी-भरी पहाड़ियों के बीच बसे एक छोटे-से गाँव में आरव नाम का युवक रहता था। उसे चित्रकारी का शौक था। वह मानता था कि जिंदगी एक खाली कैनवास है, जिस पर मनुष्य अपनी इच्छाओं और सपनों के रंग भरता है। मगर वह यह भूल गया था कि जीवन की असली खूबसूरती रंगों की संख्या में नहीं, बल्कि उनके एहसास में छिपी होती है।

एक दिन उसकी मुलाकात त्रिपुरा की वृद्ध चित्रकार शारदा देवी से हुई। उनके छोटे-से घर की दीवारों पर बने चित्रों में कहीं माँ की ममता थी, कहीं किसान का संघर्ष, कहीं बिछड़ने का दर्द तो कहीं रिश्तों की मिठास।

आरव ने पूछा, माँजी, जिंदगी का सबसे खूबसूरत रंग कौन-सा है?

शारदा देवी मुस्कराईं और बोलीं, जिस रंग से किसी दूसरे के चेहरे पर मुस्कान आ जाए, वही सबसे खूबसूरत रंग है।

आरव उनकी बात का अर्थ पूरी तरह समझ नहीं पाया।

कुछ दिनों बाद त्रिपुरा के उस इलाके में मूसलाधार बारिश हुई। पहाड़ी नदी उफान पर आ गई। कई घर जलमग्न हो गए। आरव ने देखा कि एक वृद्ध अपने घर की चिंता छोड़कर पड़ोसी के बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा रहा है। कोई भूखे को भोजन दे रहा था, तो कोई अनजान परिवार को अपने घर में आश्रय दे रहा था। विपत्ति ने सबके बीच की दूरियाँ मिटा दी थीं।

उस दिन आरव ने जाना कि इंसानियत का रिश्ता खून के रिश्तों से भी व्यापक होता है।

अगली सुबह वह शारदा देवी के पास पहुँचा। उसने अपना पुराना कैनवास सामने रखा। इस बार उस पर महल, धन और वैभव नहीं थे। उसमें एक माँ की ममता, मजदूर के हाथों का परिश्रम, बच्चों की खिलखिलाहट, जरूरतमंद की सहायता और विपत्ति में एक-दूसरे का हाथ थामे खड़े लोगों की तस्वीर थी।

शारदा देवी ने चित्र देखकर कहा, अब तुमने जिंदगी को चित्रित नहीं किया, बल्कि उसे समझ लिया है।

आरव की आँखों में चमक आ गई। उसने धीरे से कहा, माँजी, अब समझ आया कि जिंदगी का कैनवास इच्छाओं से नहीं, एहसासों से खूबसूरत बनता है।

शारदा देवी ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा, बेटा, समय कभी खुशियों के रंग देता है, कभी ग़म की स्याही। समझदार वही है जो दोनों से जीवन की ऐसी तस्वीर बनाए, जिसमें किसी के लिए नफ़रत नहीं, बल्कि मोहब्बत और इंसानियत की जगह हो।

उस दिन आरव ने अपने चित्र के नीचे लिखा–

जिंदगी की खूबसूरती इस बात में नहीं कि हमने कितने रंग अपने हिस्से में रखे, बल्कि इसमें है कि हमने कितने बेरंग चेहरों को मुस्कान के रंग दिए।

सचमुच, जिंदगी एक ऐसा कैनवास है, जिस पर हर दिन एक नई इबारत लिखी जाती है। कुछ रंग वक्त भरता है, कुछ रिश्ते और कुछ हमारे कर्म। अंततः हमारी पहचान उसी तस्वीर से बनती है, जिसे हम अपने व्यवहार और संवेदनाओं से दुनिया के लिए छोड़ जाते हैं।

- डॉ. अशोक पटना, बिहार

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी बैंक ऑफ़ बड़ौदा (गुयाना) आईएनसी ने किया

गुयाना में अपने नए प्रधान कार्यालय, जॉर्जटाउन शाखा भवन और विरासत केंद्र का उद्घाटन

गुयाना, - भारत के अंतर्राष्ट्रीय बैंक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने आज गुयाना में अपने नए प्रधान कार्यालय एवं जॉर्जटाउन शाखा के साथ-साथ बैंक ऑफ़ बड़ौदा विरासत केंद्र का उद्घाटन किया। यह विरासत केंद्र बैंक की समृद्ध विरासत और गुयाना के साथ उसके दीर्घकालिक संबंधों को प्रदर्शित करता है। बैंक ने गुयाना की स्वतंत्रता से लगभग दो महीने पूर्व, 31 मार्च, 1966 को देश में अपना परिचालन शुरू किया था।

वर्ष 1999 में बैंक के स्थानीय परिचालन को उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी, बैंक ऑफ़ बड़ौदा (गुयाना) आईएनसी में परिवर्तित कर दिया गया। वर्तमान में बैंक गुयाना में दो शाखाओं के माध्यम से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है तथा यह देश में उपस्थिति रखने वाला एकमात्र भारतीय बैंक है।

नए भवन एवं विरासत केंद्र का उद्घाटन गुयाना सहकारी गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद इरफान अली द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. देबदत्त चांद, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, बैंक ऑफ़ बड़ौदा; राष्ट्रपति कार्यालय में वित्त विभाग का दायित्व संभालने वाले वरिष्ठ मंत्री माननीय डॉ. अश्नी सिंह; गुयाना में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री चिन्मय नाइक; जॉर्जटाउन के महापौर श्री अल्फ्रेड मेंटोर; बैंक ऑफ़ गुयाना के गवर्नर डॉ. गोबिंद गंगा तथा बैंक ऑफ़ बड़ौदा (गुयाना) आईएनसी के अध्यक्ष श्री निशांत रंजन, निदेशक श्री शेखर मोसेस मल्लमपाटी एवं प्रबंध निदेशक श्री मोहित भाकुनी उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. देबदत्त चांद, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने कहा, यह केवल एक नए भवन का उद्घाटन नहीं है, बल्कि यह हमारी नवीकृत प्रतिबद्धता, एक नई शुरुआत और सबसे बढ़कर, छह दशकों से कायम संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने का प्रतीक है। गुयाना के साथ हमारे संबंध उसकी स्वतंत्रता से भी पुराने हैं। हमने इस देश के साथ-साथ प्रगति की है और इसकी आर्थिक एवं वित्तीय विकास यात्रा में सहभागी रहे हैं। गुयाना में गहरी पहुंच रखने वाले एक भारतीय बैंक के रूप में, बैंक ऑफ़ बड़ौदा को इन दो मित्र देशों के बीच वित्तीय सेतु की भूमिका निभाने पर गर्व है।

गुयाना में बैंक के व्यावसायिक प्रदर्शन पर प्रकाश डालते हुए डॉ. चांद ने ग्राहकों एवं स्थानीय समुदाय से प्राप्त विश्वास और प्रोत्साहन के प्रति आभार व्यक्त किया, जिनके सहयोग से बैंक ने हाल के वर्षों में निरंतर प्रगति की है।

पढ़ाई का ख़र्चः मदद है, बस पता होना चाहिए

उच्च शिक्षा की फ़ीस का नोटिस अक्सर परीक्षा से ज़्यादा डराता है। बीबीए, बीसीए, एमबीए या एमसीए करने वाले कितने ही विद्यार्थी अंतिम वर्ष आते-आते पैसों की चिंता में घुल जाते हैं।

पर एक बात कम लोग जानते हैं- मदद पहले से मौजूद है। कंपनियों के सीएसआर बजट और निजी फ़ाउंडेशन हर साल छात्रवृत्तियाँ देते हैं। कमी प्रतिभा की नहीं, जानकारी की है।

कुछ सीधी सलाहें। पहली, इंतज़ार मत कीजिए। ज़्यादातर छात्रवृत्तियों के आवेदन पहले ही वर्ष से खुल जाते हैं, और जो विद्यार्थी शुरू से आवेदन करता है, वह पूरे कोर्स के लिए सहारा जुटा सकता है। दूसरी, अपने वर्ग के हिसाब से खोजिए। लड़कियों, दिव्यांग विद्यार्थियों और तकनीकी क्षेत्र की छात्राओं के लिए अलग योजनाएँ हैं, जहाँ दावेदार कम होते हैं और मौक़ा बेहतर। दिव्यांगता वाली योजनाओं में वैध यूडीआईडी प्रमाणपत्र ज़रूरी है। तीसरी, अपने विषय से जुड़ी योजना चुनिए, ताकि मेहनत बेकार न जाए।

और एक चेतावनी, क्योंकि इस राह में ठग भी बैठे हैं। असली छात्रवृत्ति कभी आवेदन शुल्क नहीं माँगती। ओटीपी या बैंक पासवर्ड किसी को मत दीजिए। जो एजेंट पक्के नतीजे का वादा करे और कमीशन माँगे, उससे दूर रहिए। भरोसेमंद मंच जैसे नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर ही जाइए।

आनंद मोहन मिश्र

विवेकानंद केंद्र विद्यालय जयरामपुर चांगलांग जनपद

अरुणाचल प्रदेश दूरभाष - 9436870174

श्री महावीर स्वामी जी भगवान का निर्वाण दिवस एवं गौतम स्वामी जी का केवल ज्ञान दिवस मनाया



महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष । श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ श्री संघ महिदपुर के श्री शांतिनाथजी मंदिर में नगर में विराजित प.पू.साध्वीवर्या श्री तत्वलताश्री जी मसा आदि ठाणा 4 के सानिध्य में लड्डू चढ़ाया गया जिसमें महावीर स्वामीजी के निर्वाण लड्डू चढ़ाने का लाभ सिरेमल विमलकुमार कपिलकुमार पीयूष कुमार सकलेचा परिवार एवं गौतम स्वामी जी के लड्डू चढ़ाने का लाभ कनकमल विजय कुमार सुरेंद्रकुमार कोचर सराफ परिवार ने, आरती का लाभ केसरीमल प्रकाशचंद्र जयंत कुमार जयकुमार सुराणा परिवार एवं मंगल दिवो का लाभ चंपालाल नास्कावाला परिवार ने लिया।इस अवसर पर महावीर स्वामीजी एवं गौतम स्वामीजी की भव्यातिभव्य अंगरचना का लाभ केसरीमल प्रकाशचंद्र सुराणा परिवार,प्रभावना का लाभ जुहारमल हेमंतकुमार आंचलिया परिवार ने लिया। सभी लाभार्थी परिवारों की श्रीसंघ महिदपुर ने अनुमोदना की।संचालन ट्रस्टी मुनींद्र कुमार मंडलेचा सोनी एवं आभार सचिव ललित नास्कावाला गार्डी ने माना।

किसी के लिए यह मात्र मिट्टी के दीपक है तो किसी के जीवन के सपने हैं



मनोज अरुण व्यास,प्रस्तुति-जवाहर डोसी पीयूष हमारे समाज में हर इंसान का जीवन एक जैसा नहीं है क्योंकि यहां किसी के पास रहने के लिए आलीशान मकान है,बड़ी दुकान है और इतनी आर्थिक संपन्नता है कि यह अपनी और अपने बच्चों की हर छोटी-बड़ी जरूरत को आसानी से पूरी कर रहा है तो वहीं दूसरी ओर कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके पास न तो सिर छुपाने के लिए पर्याप्त छत है और नहीं अपनी आजीविका चलाने के लिए कोई स्थायी दुकान है लेकिन इसके बावजूद भी यह लोग जिंदगी से हार नहीं मानते और सड़क किनारे छोटी-सी जगह तलाशते त्योहार के अनुसार अपनी दुकान सजा लेते हैं।यहां यह मन को भीतर तक विचलित कर देने वाली ऐसी ही दुकान का दृश्य है जिसमें सड़क किनारे अपने छोटे से बालक के साथ मिट्टी के दीपक से घर की उम्मीद सजाए बैठी मां के सपनों को सड़क पर तेज गति से दौड़ती कार चकनाचूर कर रही है।मतलब किसी संपन्न व्यक्ति के लिए इस तरह मिट्टी के दीपक टूट जाना महज एक छोटी-सी घटना है लेकिन इस गरीब मां के लिए तो यही दीपक इसके पूरे दिन की कमाई और परिवार की उम्मीदों का सहारा हैं।दीपावली पर हम लोग अपने घरों में हजारों दीपक जलाकर प्रभु से अपने जीवन अंधकार को दूर करने की कामना करते हैं लेकिन क्या हमारी खुशियों की रोशनी किसी गरीब के जीवन में अंधेरा बढ़ाकर आनी चाहिए।ऐसे में हमें ध्यान रखना ही चाहिए कि दीपावली केवल अपने घर को रोशन करने में नहीं बल्कि किसी दूसरे के जीवन में अंधेरा होने से बचाने में भी है.....